विकास की अवस्थाएँ : बाल्यावस्था STAGES OF DEVELOPMENT CHILDHOOD

Childhood is the time when the individual's basic outlooks, values and ideals are to a great extent shaped. "-Blair, Jones and Simpson (p. 62)

बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल (CHILDHOOD: A UNIQUE PERIOD OF LIFE)

बाल्यावस्था, वास्तव में मानव जीवन का वह स्वर्णिम समय है जिसमें उसका सर्वांगीण विकास होता है। फ्रायड यद्यपि यह मानते हैं कि बालक का विकास पाँच वर्ष की आयु तक हो जाता है, लेकिन बाल्यावस्था में विकास की यह सम्पूर्णता गति प्राप्त करती है और एक परिपक्व व्यक्ति के निर्माण की ओर अग्रसर होती है।

शैशवावस्था के बाद बाल्यावस्था का आरम्भ होता है। यह अवस्था, बालक के व्यक्तित्व के निर्माण की होती है। बालक में इस अवस्था में विभिन्न आदतो व्यवहार, रुचि एवं इच्छाओं के प्रतिरूपों का निर्माण होता है। ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन के अनुसार शेक्षिक दृष्टिकोण से जीवन में बाल्यावस्था से अधिक कोई महत्वपूर्ण अवस्था नहीं है जो शिक्षक इस अवस्था के बालकों को शिक्षा देते हैं, उन्हें बालकों का, उनकी आधारभूत आवश्यकताओं का, उनकी समस्याओं एवं उनकी परिस्थितियों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए जो उनके व्यवहार को रूपान्तरित और परिवर्तित करती है।"

"No period during the life cycle is more important than childhood from an educational point of view. Teachers who work at this level should understand children. their fundamental needs, their problems and the forces which modify and produce behaviour change." -Blair, Jones and Simpson

कोल व ब्रुस ने बाल्यावस्था को जीवन का अनोखा काल बताते हुए लिखा है- वास्तव में माता-पिता के लिए बाल विकास की इस अवस्था को समझना कठिन है।" "This is, indeed, a difficult period of child development for parents to understand." -Cole and Bruce (p. 209)

इस अवस्था को समझना कठिन क्यों है ? कुप्पूस्वामी (Kupuswamy) के अनुसार, इस अवस्था में बालक में अनेक अनोखे परिवर्तन होते हैं. उदाहरणार्थ, 6 वर्ष की आयु में बालक का स्वभाव बहुत उग्र होता है और यह लगभग सब बातों का उत्तर न या नहीं में देता है। 7 वर्ष कीआयु मे वह उदासीन होता है और अकेला रहना पसन्द करता है। 8वर्ष की आयु में उसने अन्य बालकों से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने की भावना बहुत प्रबल होती है। 9 से

12 वर्ष तक की आयु में विद्यालय में उसके लिए कोई आकर्षण नहीं रह जाता है। वह कोई नियमित कार्य न करक कोई महान और रोमांचकारी कार्य करना चाहता है।

बाल्यावस्था की मुख्य विशेषताएँ

(CHIEF CHARACTERISTICS OF CHILDHOOD) यद्यपि बाल्यावस्था को 6-12 वर्ष की आयु तक माना जाता है। हरलॉक ने इसे 6 वर्ष से लेकर 12 वर्ष तक के बीच का समय माना है। इस अवस्था में ये विशेषतायें विकसित होती है।

1. **शारीरिक व मानसिक स्थिरता** (Physical and Mental Stability)- 6 या 7 वर्ष की आयु के बाद बालक के शारीरिक और मानसिक विकास में स्थिरता आ जाती है। यह स्थिरता उसकी शारीरिक व मानसिक शक्तियों को दृढता प्रदान करती है। फलस्वरूप उसका मस्तिष्क परिपक्व और वह स्वयं वयस्क सा जान पड़ता है। इसलिए रास (Ross) (p. 144) ने बाल्यावस्थाको मिथ्या परिपक्वता (pseudo Maturity) का काल बताते हुए लिखा है- "शारीरिक और मानसिक स्थिरता बाल्यावस्था की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है।"

बाल्यावस्था के विकास का महत्त्व अत्यधिक है। इस अवस्था में विकास का अध्ययन अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रकट करता है। केरल के अनुसार बालक के शारीरिक विकास और उसके सामान्य व्यवहार का सह-सम्बन्ध इतना महत्वपूर्ण होता है कि यदि हम समझना चाहे कि भिन्न-भिन्न बालकों में क्या समानतायें है, क्या भिन्नताये है, आयु-वृद्धि के साथ व्यक्ति में क्या-क्या परिवर्तन होते है तो हमें बालक के शरीरिक विकास का अध्ययन करना होगा

"The relationship between physical growth and behaviour is so important that an understanding of how the human child grows and develops is essential to an understanding of similarities and differences between different individuals and the changes that take place in the same individual with increasing age." -Carrel: A Man Unknown

2. (Increase in Mental Abilities) बाल्यावस्था में बालक की मानसिक योग्यताओं में निरन्तर वृद्धि होती उसकी संवेदना और प्रत्यक्षीकरण की शक्तियों में वृद्धि होती है। वह विभिन्न बातों के बारे में तर्क और विचार करने लगता है। वह साधारण बातो पर अधिक देर तक अपने ध्यान को केन्द्रित कर सकता है उसमें अपने पूर्व अनुभवों को स्मरण रखने की योग्यता उत्पन्न हो जाती है।

3. **जिज्ञासा की प्रबलता** (Forceful Curiosity) बालक की जिज्ञासा विशेष रूप से प्रबल होती है। वह जिन वस्तुओं के सम्पर्क में आता है, उनके बारे में प्रश्न पूछ कर हर तरह की जानकारी प्राप्त करना चाहता है। उसके ये प्रश्न शैशवावस्था के साधारण प्रश्नों से भिन्न होते हैं। अब वह शिशु के समान यह नहीं पूछता है 'यह क्या है ? इसके विपरीत, वह पूछता है यह ऐसे है ? "यह ऐसे कैसे हुआ है?"

4. **वास्तविक जगत् से सम्बन्ध** (Relationship with Real World) इस अवस्था में बालक, शैशवावस्था के काल्पनिक जगत् का परित्याग करके वास्तविक जगत में प्रवेश करता है। वह उसकी प्रत्येक वस्तु से आकर्षित होकर उसका ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। स्ट्रेंग (Strang) (p. 262) के शब्दों में बालक अपने को अति विशाल संसार में पाता है और उसके बारे में जल्दी से जल्दी जानकारी प्राप्त करना चाहता है।"

5. **रचनात्मक कार्यों में आनन्द** (Pleasure in Creative Activities) बालक को रचनात्मक कार्यों में विशेष आनन्द आता है वह साधारणत घर से बाहर किसी प्रकार का कार्य करना चाहता है।

जैसे- बगीचे में काम करना या औजारों से लकड़ी की वस्तुएँ बनाना। इसके विपरीत बालिका घर में ही कोई-न-कोई कार्य करना चाहती है, जैसे-सीना, पिरोना या कढ़ाई करना।

6. **सामाजिक गुणों का विकास** (Development of Social Qualities)- बालक विधालय मे छात्रों और अपने समूह के सदस्यों के साथ पर्याप्त समय व्यतीत करता है। उसमें अनेक सामाजिक गुणों का विकास होता है, जैसे सहयोग सद्भावना, सहनशीलता आज्ञाकारिता आदि।

7. **नैतिक गुणों का विकास** (Development of Moral Traits) - इस अवस्था के आरम्भ में ही बालक में नैतिक गुणों का विकास होने लगता है। स्ट्रेंग (strang) (p 289) के मतानुसार सात और आठ वर्ष के बालकों में अच्छे-बुरे के ज्ञान का एवं न्यायपूर्ण व्यवहार, ईमानदारी और सामाजिक मूल्यों की भावना का विकास होने लगता है।"

8. **बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विकास** (Development of Extrovert Personality) बालक का व्यक्तित्व अन्तर्मुखी (Introvert) होता है, क्योंकि वह एकांतप्रिय और केवल अपने मे रुचि लेने वाला होता है। इसके विपरीत, बाल्यावस्था में उसका व्यक्तित्व बहिर्मुखी (Extrovert) हो जाता है, क्योंकि बाह्य जगत् में उसकी रुचि उत्पन्न हो जाती है। अतः वह अन्य व्यक्तियों वस्तुओं और कार्यों का अधिक से अधिक परिचय प्राप्त करना चाहता है।

9. **संवेगों का दमन व प्रदर्शन** (Suppression and Exposition of Emotions)- बालक अपने संवेगों पर अधिकार रखना एवं अच्छी और बुरी भावनाओं में अन्तर करना जान जाता है। वह उन भावनाओं का दमन करता है, जिनको उसके माता-पिता और बड़े लोग पसन्द नहीं करते हैं, जैसे काम-सम्बन्धी भावनायें।

10. **संग्रह करने की प्रवृत्ति** (Tendency to Acquisitiveness) बाल्यावस्था बालको और बालिकाओं में संग्रह करने की प्रवृत्ति बहुत ज्यादा पाई जाती है। बालक विशेष रूप से कांच की गोलियो, टिकटों, मशीनों के भागों और पत्थर के टुकड़ों का संचय करते हैं। बालिकाओं में चित्र खिलौनों गुड़ियों और कपड़ों के टुकड़ों का संग्रह करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

11. **निरुद्देश्य भ्रमण की प्रवृत्ति** (Tendency of Rouming about without Aim)- बालक मे बिना किसी उद्देश्य के इधर-उधर घूमने की प्रवृत्ति बहुत अधिक होती है। मनोवैज्ञानिक बर्ट (Burt) ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया है कि लगभग 9 वर्ष के बालकों में आवारा घूमने बिना छुट्टी लिए विद्यालय से भागने और आलस्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने की आदत सामान्य रूप से पाई जाती है।

12**. काम- प्रवृत्ति की न्यूनता** (Lesser Sex Tendency) बालक मे काम-प्रवृत्ति की न्यूनता होती है। वह अपना अधिकांश समय मिलने-जुलने, खेलने-कूदने और पढ़ने-लिखने में व्यतीत करता है।

अतः यह बहुत ही कम अवसरों पर अपनी काम-प्रवृत्ति का प्रदर्शन कर पाता है।

13. **सामूहिक प्रवृत्ति की प्रबलता** (Intensity of Gregariousness)- बालक में सामूहिक प्रवृत्ति बहुत प्रबल होती है। वह अपना अधिक से अधिक समय दूसरे बालकों के साथ व्यतीत करने का प्रयास करता है। रास (Ross) (p. 145) के अनुसार-"बालक प्रायः अनिवार्य रूप से किसी-न किसी समूह का सदस्य हो जाता है, जो अच्छे खेल खेलने और ऐसे कार्य करने के लिए नियमित रूप से एकत्र होता है, जिनके बारे में बड़ी आयु के लोगों को कुछ भी नहीं बताया जाता है।

14. **सामूहिक खेलों में रुचि** (Interest in Group Games) बालक को सामूहिक खेलो में अत्यधिक रुचि होती है। वह 6 या 7 वर्ष की आयु में छोटे समूहों में और बहुत काफी समय तक खेलता है। खेल के समय बालिकाओं की अपेक्षा बालकों में झगड़े अधिक होते है। 11 या 12 वर्ष की आयु में बालक दलीय खेलों में भाग लेने लगता है। स्ट्रेंग (Strang) (p 380) का विचार है ऐसा शायद ही कोई खेल हो, जिसे दस वर्ष के बालक न खेलते हो।"

15. **रुचियों में परिवर्तन** (Change in Interest)- बालक की रुचियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। वे स्थायी रूप धारण न करके वातावरण में परिवर्तन के साथ परिवर्तित होती रहती है।